❑विगत

मारवाड़ रा परगनां री विगत

मुहणोत नैणसी

लेखक परिचै

मुहणोत नैणसी जोधपुर रा महाराजा गजसिंह प्रथम अर जसवंत सिंह प्रथम रै राज (1638-1678 ई.) में हाकिम अर देस-दीवाण रै ओहदै माथै काम कर्‌यौ। इण वजै सूं नैणसी नैं राजकाज अर शासन चलाणै रा तौर-तरीकां रै सागै-सागै वित्तीय मामलात री ई सांगोपांग जाणकारी ही। नैणसी जुद्धां में भी सेना सागै जाया करता हा। औ इज कारण हौ कै नैणसी आपरा ग्रंथ 'ख्यात' अर 'विगत' (इतिहासू विवरण) मांय मारवाड़ रै इतिहास अर भूगोल रा जींवता-जागता चित्राम मांड्या है। नैणसी रा अै दोनूं ई ग्रंथ राजस्थान रै मध्यकाळ रै इतिहास रा महताऊ स्रोत है। किणी घटना रौ पुख्ता प्रमाण नीं मिळण माथै नैणसी आपरा ग्रंथां मांय 'एक बात यूं सूनी छै' लिखनै उण बात रौ विवरण दियौ है। मारवाड़ रै लूंठै इतिहास लेखक रै रूप में नैणसी रौ जस जुगां-जुगां अमिट रैवैला।

नैणसी रा पिता जयमल कुशल प्रशासक अर वीर जोद्धा हा, जिका जोधपुर महाराजा सूरसिंह अर महाराजा गजसिंह प्रथम री सेवा में रैया अर उणां नैं 'देस-दीवाण' रौ ओहदौ दिरीज्यौ हौ। नैणसी री शिक्षा-दीक्षा अर बाळपणै रै बारै में कठैई कोई जाणकारी नीं मिळै। पण इणां री साहित्य-रचना अर प्रशासन-दक्षता सूं औ सैज ई अनुमान लगायौ जाय सकै कै वांरी शिक्षा-दीक्षा रौ इणां रा पिता समुचित प्रबंध कर्‌यौ होवैला। नैणसी असाधारण व्यक्तित्व रा धणी हा। वां मारवाड़ रा घणकरा जुद्धां अर आक्रमणां रौ बौत ई दक्षता अर सफळता रै साथै संचालन कर्‌यौ। पण राजनीतिक कै सैनिक जीवण री तुलना में इणां रौ साहित्यिक जीवण घणौ महताऊ रैयौ। 'नैणसी री ख्यात' अर 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' आं रा दो काळजयी ग्रंथ है, जिका इतिहास रा प्रामाणिक स्रोत मानीजै। इणी कारण नैणसी मारवाड़ रा 'अबुल फजल' बाजै। नैणसी अर इणां रा भाई झूठै आरोपां में कैद करीजग्या, जिण सूं दुखी होयनै दोनूं भाई सन् 1670 में प्राण त्याग दिया।

पाठ परिचै

'मारवाड़ रा परगनां री विगत' 17वैं सईकै रै मारवाड़ राज्य रै इतिहास रौ महताऊ ग्रंथ है। तीन भागां में छप्योड़ै इण ग्रंथ रौ संपादन डॉ. नारायणसिंह भाटी कर्‌यौ। इणरै पैलै भाग (1967) में जोधपुर, सोजत अर जैतारण रौ विवरण है। दूजै भाग (1968) में फलोदी, मेड़ता, सिवाना अर पोकरण रौ विवरण है। तीजै भाग (1974) में सात परगनां रौ (हिंदी मांय) सार रूप में विवरण है। इणमें केई खांप-सरदारां माथै टिप्पणियां, तकनीकी सबदां री व्याख्या, इतिहासपुरुसां री जलमपत्रियां अर परिशिष्ट है।

महाराजा गजसिंह रै देवलोक होयां पछै जसवंत सिंह नैं साहजहां मारवाड़ रौ टीकौ दियौ (सं. 1695), उण समै जोधपुर, सोजत, फलोदी, मेड़ता अर सिवाणै रा परगनां इज दिया हा। पछै जैतारण रौ परगनौ अर फेर बादसाह री मंजूरी सूं सं. 1707 में पोकरण रौ परगनौ ई महाराजा आपरै अधिकार में कर लीन्यौ। आं इज सात परगनां रौ विवरण इण ग्रंथ में नैणसी दियौ है। इण पाठ में मारवाड़ रा परगनां री विगत रै दूजै भाग सूं 'वात परगने मेड़ते री' रा सरुआती अंस बानगी सरूप दिरीज्या है।

मारवाड़ रा परगनां री विगत

(५) वात परगने मेड़ते री

१. परगनौ मेड़तो आद सहर छै, राजा मानधाता रौ बसायौ, यूं सको कहै छै। केहीक दिन युं पण सुणीयौ छै। राव कान्हड़दे रै घणी धरती हुती तद कै छै एक बार कान्हड़दे रौ अमल हुवौ छै। तठा पछै घणा दिन आ ठौड़ षाली सूनी रही छै। सु अठै झाड़-झंगी घणी हुय रही थी।

२. पछै राव जोधौ मारवाड़ लीवी, संमत १५१५ जेठ सुदी ११ जोधपुर बासीयौ, तरै भायां बेटां नुं धरती दैण रौ विचार कीयौ, तरै सोनगरी चांपा षींवावत री बेटी तिण रै पेट रा राव जोधा रा बेटा २ बरसिंघ दूदो सगा भाई था। तिणां नुं राव कह्यौ—म्है थांनु मेड़तो दां छां, थे जाये बसौ। तरै इण कबूल कीयौ। इणनुं घोड़ौ सिर पाव दे सीष दीवी। अै आपरा गाडा लेनै चोकड़ी आण डेरौ कीयौ। चोकड़ी रौ भाषर देषण गया था, तिण समै रा. उदौ कान्हड़देओत जैतमाल नागौर था छोड गगड़ाणै आंण गाडा छोडीया छै। रा. उदैसिंघ सिकार चारूं तरफ रमण पिण जायै नै धरती नै पिण सारी देषतौ फिरै। सु उदो कान्हड़देओत फिरतौ-फिरतौ आ ठौड़ मेड़ता री दीठी थी सु उदा नुं किणीहीक षबर कही—राव जोधै रा बेटा २ आण धरती बसण आया छै सु चौकड़ी रै पहाड़ गढ़ करावण रौ मतौ छै। तळहटी सेहर बसावण रौ मन धरै छै।

३. तरै रा. उदौ कान्हड़देओत आप चढ़ नै रा. बरसिंघ दूदा कन्है गयौ, दिन २ तथा ४ मुजरौ कीयौ। सैंधौ हुवौ। तरै रा. बरसिंघ जोधावत नुं कह्यौ—म्हें सुणां छां राज आ धरती बासण मतौ छै। कठै ही ठौड़ बीचार छै? तरै बरसिंघ कहौ— मन तौ धरां छां। तरै उदै कहीयौ—राज कांई ठौड़ बिचारी छै। तरै बरसिंघ दूदौ आय चढीया रा. उदा नुं चोकड़ी रौ भाषर दीषाळीयौ। तरै उदै नुं पूछीयौ—आ ठौड़ किसड़ी छै? तरै उदै कहीयौ— ठौड़ भली चंगी छै। ठौड़ १ म्हें सषरी दीठी छै राज एक वेळा उठै पधारौ। रा. उदौ रा. बरसिंघ दूदै जोधावत नुं मेड़तौ सैहर बसै छै तठै ले आयौ कुंडल बेजपो तळाव आद थौ सु दीठा। पछै जठै हिमार मेड़तै कोटड़ी छै आ ठौड़ दीठी। रा. बरसिंघ दुदा राजी हुवा। गाडा अठै आंण नै कोट री रांग दीवी।

४. रहण नुं इण ठौड़ आया तरै कोटड़ी री ठौड़ दुय नाहर ऊभा छै, तिण माहै वडो नाहर छै, एक उण था छोटौ नाहर छै। सु वडो नाहर उठै गाजीयौ, ताड़ीयौ पछै उठा थी परौ गयौ। नै छोटौ नाहर छै सु उठै गुफा थी तिण माहै बैठौ। तरै सांवणी साथे हुतौ सु विण माथौ धूणीयौ। तरै इण वेळा बरसिंघ दीठौ। कहीयौ थें केण आटे माथौ धूणीयौ। तरै ई वेळा दोय चार उजर कीयौ, पिण बरसिंघ हठ कर पूछीयौ। तरै सांवणी कहौ—सीवण एकण भांतरौ हुवौ छै। तरै बरसिंघ कहौ—इण सांवण रौ कासुं विचर छै? तरै सांवणी कहौ—राज जीवसौ तठा सुधी आ ठौड़ राज भोगवसो तठा पछै आ ठौड़ दुदा रौ पेट रहसी, रावळा बेटा पोतां नुं आ ठौड़ नहीं रहै। तद दुदो बरसिंघ एक था, माहे जीव जुदा न था तरै बरसिंघ कहौ—म्है दुदौ एक हीज छां। पछै इण कोटड़ी ठौड़ रांग कोटड़ी री भराई। राव बरसिंघ दुदै आ ठौड़ संमत १५१८ चैत्र सुदी ६ नुं हसत नषतर कहै छै बासी।

५. रा. उदो कान्हड़देओत नुं पराधांन कीयौ। सारी मदार उदा रै माथै छै। तिण समै धरती सारी मेड़ता री उजड़ छै। सु रजपूत आवै छै सु बसता जाय छै। तिण समै नागौर सवाळष दिसा डीगा था राज देला रौ कठोती जायेल री रहौ थो उठै वैर पड़ीयौ। तरै घर राज डंगो राव बरसिंघ दुदा कनै आयौ। कहौ—मोनुं आंणौ तौ म्हे सारा षेड़ा बसावां। तरै थीर राज कहौ, तिण भांत दिलासा कीया छै। मेड़तै हीज पुराणा डांगावास री ठौड़ थीर राज नुं देस मुष चौधरी सारा देस रौ कर बासीयौ। थीर राज सबळौ आदमी थौ। पछै सवाळष रा जाट दिलासा कर करनै आंण-आंण मेड़ता रा गांवां बसता गया। पछै मेड़ता रा सारा गांव बसीया, धरती आवा-दांन हुई।

६. श्री फळोधी पारसनाथजी रौ देहूरौ संमत ११९१ जारौड़ै साह श्रीमल करायौ तठा पछै संमत १५५५ सु राणे हेमराज देवराज रै बैटै उधुर करायौ। 'जात सुराणै धरम धोष सुरप्रतबोधीया जात पुंवार।'

७. रा. बरसिंघ उदौ केहीक सांषला मार नै चौकड़ी बसीया। कोसांणो मादळीयो पिण सांषला के मारीया।

८. इण गांव ईण ठौड़ां रा जाट आण इण गांवां बसायौ। डागा कठौती रा—

डांगावास, लोहड़ोयाह, रायसल बास, इतीवे। थीरोदा थीरो नागौर रा—सातलवास।

वडीवारा रताऊरा
फालो बडगांव
चांदेलीयां चुवो
महेवडो
दुगसता दुसताऊ रा
भोवाली
डीडेल रावणा बुगरड़ा रा
लांबीयां
कमेडीया भादु
कलरो
रेयां कासणीया कसणा रा
रेयां
रडु ग्वालरां तगो नागोर रा
राहण
तेतरवाल तीतरी नागोर री
झड़ाऊ
गोदारो पांडो रौ बीकानेर रौ
झीथीया वडाली
सोमडवाल सोमड़ी नागोर री
रोहीयो
बोहड़ीया कठोती था डागा साथ आया
मोकालै अणीयाळौ सहेसड़ो
गोरा
पादुबड़ी तांबड़ौली
लटीयाळ थीरोदा नागोर
लापोळाई काकड़षी
चोहीलां संवो नागोर रौ
मोडरी
वात गोहीलोत अजमेर रा
नीलीया

९. इतरा गांव सारा आजणा जाट छै—

डांगा आद चहुवांण राजपूत था। पछै इण रौ वडैरो जगसी छाजु रौ जाट हुऔ।

१ माहारीष २ संम ३ फोकट ४ वीलायो ५ छाजु ६ देलू ७ जगसी ८ दुलोहराव ९ थीरराज १० डुंगर ११वीको १२ छीतर १३ हेमो १४ जालप १५ षींवराज।

१०. श्री फळोधीजी री माताजी रौ देहरौ आद तौ राजा मानधाता रौ करायौ तठा पछै संमत १०८३ थंभ संवत छै। एक संमत १०७६ पीण थंभे एक छै। तठा पछै सुरांणो हेमराज देवराज रै रा. बरसिंघ दुदा रै हुकम सुं संमत १५५५ उधोर करायौ।

११. धरती सारी बसी रजपूत पण घणा साष-साष रा बसीया। मुदौ जैतमाल माथै मंडीयौ। उदावदु सारा राज रौ कांम छै। पछै कितराहक दिन रा. बरसिंघ नै रा. दुदै अणवत हुई। रा. दुदौ छांड नै बीकानेर गयौ। बांसै दुकाळ पड़ीयौ। षांण नु घणौसो कुं जुड़ै नहीं। तरै जोधपुर सूं बरसिंघ साथे चाकर बाबर हीड़ागर परज लोग आया था सु सारा परा जाण लागा। तरै रा. बरसिंघ दीठौ, यु कुंही मरां, तरै रा. बरसिंघ साथै भेळो कर नै सैंभर नवलषी मारी। घणा माल लूटीया। सोवन मोर उडीया। तिण दिन अजमेर मांडव रै बादशाह रै दाषल थी, मलूषान अठै अजमेर रै सोबे ऊपर थौ। सु बुरौ घणौ ही मांनीयौ। पिण बैस रहौ। सैंभर मारी तिण साष रौ कवित्त—

तांण चीर तळहुटी घणौ कीयौ घाटौ।
माटौ फोड़ कोट घाघरौ फाड़ कंचुओ।
चौहटो कर मदा गाळिया अहर भड़ां अमरीस।
कूट लूटिया कनक हीरा मोती।
विपरीत चिरत तह रंग रमी, भार भरत जोबन भरो।
बरसिंघ कान्ह गुवाळियो गोपी संभर ज्यरी।।

१२. तौ ही अजमेर रौ सुबायत बैस रहौ। तिण समै राव सातल नै कंवर बरसिंघ अणवत हुई। बरसिंघ सातल नुं कहै—कुंही जोधपुर बाप की मांहे म्हे ही पावां, तरै बेऊ यांरा परधांन अजमेर गया। मलुषांन कहौ—दोनूं अठै आवौ, म्है समझाई देस्यां। एक तो बात युं सुणी छै—राव सातल नै रा. बरसिंघ अजमेर गया। रा. बरसिंघ मलुषांन सुं काहाव कीयौ—मोनुं जोधपुर दौ, हुं रु. ५०००० पेसकसी रा दूं। पछै बीच राठोड़े फिर नै राव सातल नै राव बरसिंघ नुं एक कीया। उठी थी मलुषांन सुं बिगर मिळीयां उठै आया।

१३. के कहै छै आप न आया। परधांन आया, आ वात परधांन की थी पण मलुषांन बरसिंघ सुं लागतो थौ हीज कहै—एक तौ मांहरी सैंभर मारी, तिण रौ मांहारौ म्है बित मांगां। दूजौ मांहानुं पेसकसी कबूली थी, म्है ऊपर कीयौ। तरै केहीक गांवां राव सातल केलावा सुं बरसिंघ नुं जोधपुर रा दीया तिकै सुणीया, कहौ—आपरौ मकसद कीयौ, मांहारी पेसकसी आही राषी सु कुंण वासतै। म्हांनु कबूलीयो थौ, सुदो मलुषांन मागीयो। इण उजर कियौ। मलुषांन कटक भेळो कीयौ। मेड़ता री गाडा संध आया। तरै इणै जोधपुर राव सातल नुं खबर मेली। राव कहौ—थेई उठै लड़ाई मत करौ। मांणस लेनै जोधपुर आवौ बेगा। तरै बरसिंघ तौ जोधपुर आयौ। बांसै हुऔ मुलषांन आयौ। मेड़ते री धरती बिगाड़ नै जोधपुर री धरती पिण बिगाड़ी। पींपाड़ डेरौ कर नै सथलांणै सुधी धरती सारी मार नै बंध की।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

यूं सको कहै छै=सगळा लोग कैवै। मतौ छै=विचार है। सैंधो हुऔ=जाण-पिछाण काढी, ओळखाण करी। कठै ही ठौड़ बीचार छै=कठै बसण रौ विचार है। दीषाळीयौ=देखायौ। सषरी=आछी, चोखी। आद थौ=पुराणौ बण्योड़ौ हौ। कोट री रांग=गढ री नींव। सांवणी=सुगन जाणणियौ, सुगनी। उजर कीयौ=टाळमटोळ करी। सीवण=सुगन। राज जीवसौ=आप जींवता रैसौ। दुदा रौ पेट रहसी=राव दूदा रा वंसज अठै रैवैला। माहे जीव जुदा न था=मन में कोई भेदभाव नीं। हसत नषतर कहै छै बासी=हस्त नक्षत्रमें नींव लगायनै बसायी। सवाळष=नागोर पट्टी रौ जूनौ नांव। वैर पड़ीयौ=बैर-भाव होयग्यौ। मोनूं आंणौ=म्हनैं आवण रौ मौकौ देवौ, बुलावौ। देस मुष चौधरी=देस रौ प्रमुख चौधरी। सबळौ=बळवान, सबल। देहूरौ=देवरौ, मिंदर। उधुर करायौ=जीर्णोद्धार करवायौ। अवणत=अनबन, अदावत। दुकाळ=भयंकर काळ, दोवड़ौ काळ। हीड़ागर=सेवा-चाकरी करणिया। परज=प्रजा, रैय्यत। सोवन मोर उडीया=मोकळौ धन-माल हाथ लागणौ। बैस रहौ=बैठ्यौ रैयौ। बित=धन, माल। कटक=सेना, फौज। बांसै हुऔ=लारौ करतौ, पीछौ करतौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' रा लेखक कुण हा?

   (अ) नैणसी (ब) जयमल

   (स) दयालदास सिंढायच (द) अबुल फजल

   ( )

2. नैणसी सूं पैलां वांरा पिता जयमल मारवाड़ राज में किण ओहदै माथै काम करयौ?

   (अ) कामदार (ब) कोठारी

   (स) देस-दीवाण (द) भंडारी

   ( )

3. नागौर पट्टी रौ जूनौ नांव कांई हौ?

   (अ) नागौरण (ब) सवाळष

   (स) नागरवाळ (द) नागधरा

   ( )

4. मेड़ता परगनौ किण रियासत में हौ?

   (अ) मेवाड़ (ब) मारवाड़

   (स) शेखावाटी (द) बीकानेर

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. नैणसी किण महाराजा रै शासनकाल में मारवाड़ रा देस-दीवाण हा?
2. इण पाठ में मारवाड़ रै किण परगनै री विगत दिरीजी है?
3. 'सोवन मोर उडीया' इण मुहावरै रौ कांई अरथ है?
4. नैणसी री तुलना देस रै किण इतिहासकार सूं करी जावै?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. नैणसी रै पिता जयमल रै व्यक्तित्व री विसेसतावां लिखौ।
2. नैणसी रा चार चारित्रिक गुण बतावौ।
3. नैणसी रै रच्योड़ा महताऊ ग्रंथ कुण-कुणसा है।
4. मारवाड़ में कित्ता परगना हा, वांरा नांव लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''राजनीतिक कै सैनिक जीवण री तुलना में नैणसी रौ साहित्यिक जीवण घणौ महताऊ रैयौ।'' इण कथन नैं दाखला देयनै सिद्ध करौ।
2. 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' सूं सामल 'वात परगने मेड़ते री' नैं आपरै सबदां में लिखौ।

3. ''नैणसी राजस्थानी में गद्य लेखन रौ सांतरौ काम करयौ है।'' नैणसी री भासा-सैली रै आधार माथै इण कथन नैं पुख्ता करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. परगनौ मेड़तो आद सहर छै, राजा मानधाता रौ बसायौ, यूं सको कहै छै। केहीक दिन युं पण सुणीयौ छै। राव कान्हड़दे रै घणी धरती हुती तद कै छै एक बार कान्हड़दे रौ अमल हुवौ छै। तठा पछै घणा दिन आ ठौड़ षाली सूनी रही छै। सु अठै झाड़-झंगी घणी हुय रही थी।
2. रहण नुं इण ठौड़ आया तरै कोटड़ी री ठौड़ दुय नाहर ऊभा छै, तिण माहै वडो नाहर छै, एक उण था छोटौ नाहर छै। सु वडो नाहर उठै गाजीयौ, ताड़ीयौ पछै उठा थी परौ गयौ। नै छोटौ नाहर छै सु उठै गुफा थी तिण माहै बैठौ। तरै सांवणी साथे हुतौ सु विण माथौ धूणीयौ। तरै इण वेळा बरसिंघ दीठौ। कहीयौ थें केण आटे माथौ धूणीयौ।
3. रा. उदो कान्हड़देओत नुं पराधांन कीयौ। सारी मदार उदा रै माथै छै। तिण समै धरती सारी मेड़ता री उजड़ छै। सु रजपूत आवै छै सु बसता जाय छै। तिण समै नागौर सवाळष दिसा डीगा था राज देला रौ कठोती जायेल री रहौ थो उठै वैर पड़ीयौ। तरै घर राज डंगो राव बरसिंघ दुदा कनै आयौ। कहौ—मोनुं आंणौ तौ म्हे सारा षेड़ा बसावां।